

**आउटकम बजट 2018-19**

विभाग का नाम- उत्तराखण्ड अन्तरिक्ष उपयोग केन्द्र

विभाग के अन्तर्गत प्रस्तावित एस.डी.जी. नं. 9  
(Innovation Communication, Infrastructure and Industries)  
(धनराशि रु0 लाख में)

क्र.सं.	योजना का नाम	योजना का उद्देश्य	आउट ले/बजट		एस0डी0 जी0 Goals/ Indicator	परिकल्पित (प्रोजेक्टेड) आउटपुट वर्ष 2018-19	1-4-2017 की स्थिति (बेस लाइन)	परिकल्पित (प्रोजेक्टेड) आउटकम	समय सीमा
			राजस्व	पूँजी गत					
1	डिजिटल डेटाबेस क्रिएशन (1:50000)- (1:10000)	<ul style="list-style-type: none"> <li>उत्तराखण्ड जियोस्पाशियल सर्विसेज पोर्टल का सृजन।</li> <li>राज्य में जनपद/ब्लॉकवार विविध सूचनाओं यथा- भू-उपयोग, शहरी विकास, आधारभूत संरचनाओं, जल संसाधनों, भू-अपघटन, वन घनत्व/प्रकार आदि का विभिन्न स्केलों पर सृजन किया जाएगा।</li> <li>उक्त डेटाबेस का उपयोग राज्य के विकास एवं नियोजन कार्यों में करने हेतु वेब आधारित सूचना तंत्र सृजित किये जायेंगे।</li> </ul>	1.00		9	<ul style="list-style-type: none"> <li>उत्तराखण्ड जियोस्पाशियल सर्विसेज पोर्टल का सृजन।</li> <li>देहरादून, रुद्रप्रयाग, चमोली, पौड़ी, अल्मोड़ा, बागेश्वर, नैनीताल का भू-उपयोग, भू-अपघटन, परती भूमि मानचित्र तैयार किया जाएगा।</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>यूसैक द्वारा उत्तराखण्ड निर्वाचन आयोग से सहयोग से जी.आई.एस. आधारित पोलिंग बूथ सूचना तंत्र सृजित किया गया है जिसमें निर्वाचन आयोग के उपयोग हेतु प्रदेश के 70 विधानसभा क्षेत्रों के पोलिंग बूथों की सूचनाएं ऑनलाइन इंटरैक्टिव मैप्स में उपलब्ध कराई गई हैं।</li> <li>इस कार्ययोजना के तहत निम्नलिखित वेब पोर्टल विकसित किये गये हैं- <ul style="list-style-type: none"> <li>स्कूल मैपिंग इंफोर्मेशन सिस्टम</li> <li>ई-कोटद्वार पोर्टल</li> <li>सहयोगी</li> </ul> </li> </ul>	1 वर्ष	
2	डेटा मैप लाइब्रेरी (एटलस क्रिएशन, डेटा रिपोजिट्री) एण्ड विजुअल इन्टरप्रिंटेशन	<ul style="list-style-type: none"> <li>केन्द्र में, रिमोट सेंसिंग और जी.आई.एस. उपयोग हेतु आधुनिक सॉफ्टवेयर तथा हार्डवेयर की उपलब्धता एवं उच्चीकरण व्यवस्था एटलस सृजन, डेटा रिपोजिट्री एवं भौतिक</li> </ul>	1.00		9	स्कूल मैपिंग इंफोर्मेशन सिस्टम एटलस तैयार करना। सॉफ्टवेयर अपग्रेड करना।			1 वर्ष

	/इमेज प्रोसेसिंग लैब	संसाधनों की उपलब्धता।						
3	लैण्ड यूज एण्ड रुरल/अर्बन प्लानिंग	<ul style="list-style-type: none"> <li>मल्टी-टेम्पोरल सैटेलाइट डेटा के उपयोग से 1:50000 व 1:100000 स्केल पर प्रत्येक पांच वर्ष के अन्तराल में राज्य का भू-उपयोग तथा भू-आवरण, भू-अपघटन तथा परतीभूमि मानचित्र तैयार करना तथा उनमें आए बदलावों का अध्ययन करना।</li> <li>हाई रेजोल्यूशन सैटेलाइट डेटा से राज्य के प्रमुख शहरों/नगरों की लार्ज स्केल मैपिंग करना तथा उपलब्ध भू-रिकार्डों तथा मल्टी-टेम्पोरल, उपग्रह आंकड़ों की मदद से शहरी क्षेत्रों में हो रहे विस्तार का मानचित्र तैयार करना कर अर्बन इंफोर्मेशन सिस्टम तैयार करना।</li> </ul>	4.00		9	राज्य का भू-उपयोग तथा भू-आवरण मानचित्र 1:100000 स्केल पर मानचित्रीकरण करना।	<ul style="list-style-type: none"> <li>राज्य के 6 जनपदों का भू-उपयोग एवं भू-आवरण मानचित्रीकरण कर जियोस्पाशियल डेटाबेस सृजित किया जा गया है, जिसमें वर्ष 2011-12 से 2015-16 के मध्य 5 वर्षों में भू-उपयोग तथा भू-आवरण में आये परिवर्तनों को भी चिन्हित करके उनका भू-सत्यापन का कार्य किया गया है। वर्ष 2015-16 के सैटेलाइट डेटा LISS III के तीन सीजन (रबी, खरीफ, जायद) के उपयोग से 1:50,000 के स्केल पर राज्य की कुल भूमि को विभिन्न श्रेणियों में मानचित्रित किया गया है- जिसमें बर्फ-हिमनद क्षेत्र, वन क्षेत्र, चरागाह भूमि, कृषि भूमि, जलग्राही क्षेत्र, आवासीय क्षेत्र व अन्य निर्मित क्षेत्र आदि प्रमुख हैं।</li> </ul>	1 वर्ष
4	वाटर रिसोर्स मैनेजमेन्ट	<ul style="list-style-type: none"> <li>अलकनंदा बेसिन के 17 जलागम क्षेत्रों का इरीगेशन पोटेंशियल जोन मैपिंग करना व चम्पावत, नैनीताल जिलों में विलुप्त हो रहे जल संसाधनों के कारणों का अध्ययन करना व चिन्हित क्षेत्रों में ग्राउण्ड</li> </ul>	7.00		9	<ul style="list-style-type: none"> <li>अलकनंदा बेसिन के 3 जलागम क्षेत्रों का इरीगेशन पोटेंशियल जोन मैपिंग करना।</li> <li>उत्तराखण्ड राज्य के अलकनंदा, भागीरथी, यमुना, धौलीगंगा, गौरीगंगा बेसिन में</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>राज्य के तीन बेसिनों-अलकनंदा, भागीरथी एवं यमुना में स्नो कवर मैपिंग Resourcesat 1/2 AWiFS satellite data के उपयोग से की जा रहा है। इस परियोजना के अर्न्तगत NDSI Products</li> </ul>	1 वर्ष

		<p>सर्वे करना।</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>● उत्तराखण्ड राज्य के अलकनंदा, भागीरथी, यमुना, धौलीगंगा, गौरीगंगा बेसिन में हिमाच्छादित क्षेत्रों का उपग्रहीय आंकड़ों से अध्ययन करना व फील्ड सर्वे करना।</li> <li>● शोध प्रकाशन हेतु राज्य व भारत देश के राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय कांफ़ेस, ट्रेनिंग, सेमीनार व कार्यशाला में प्रतिभाग करना।</li> <li>● उत्तराखण्ड राज्य के 6 जनपदों— उत्तरकाशी, चमोली, पिथौरागढ़, बागेश्वर, टिहरी, रुद्रप्रयाग में रेखीय विभागों, विषय-विशेषज्ञों, जनप्रतिनिधियों की सहभागिता से बर्फ व हिमनद क्षेत्रों में हो रहे परिवर्तनों हेतु क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन करना।</li> </ul>				<p>हिमाच्छादित क्षेत्रों का उपग्रहीय आंकड़ों से अध्ययन करना व फील्ड सर्वे करना।</p>	<p>की सहायता से प्रत्येक 5 और 10 दिनों अन्तराल में हिमनदों क्षेत्रों में स्नो कवर मैपिंग की जाती है साथ ही प्रत्येक साल हिमनदों क्षेत्रों में स्नो कवर क्षेत्रों में आ रहे परिवर्तनों का अध्ययन वर्ष 2017-18 के लिए किया जा गया है।</p>	
5	नेचुरल रिसोर्स मैनेजमेन्ट	<ul style="list-style-type: none"> <li>● उच्च विभेदीसैटेलाइट डेटा के उपयोग से राज्य के प्राकृतिक संसाधनों का उच्च पैमाने पर मानचित्रीकरण।</li> <li>● बहु-सामयिक सैटेलाइट डेटा का प्रयोग करके प्राकृतिक संसाधनों का समयावधि अनुश्रवण।</li> </ul>	.50		9	<p>अल्मोड़ा व देहरादून के 8 जलागम क्षेत्रों के भू-उपयोग/भू-आवरण मानचित्र तैयार कर विगत दस वर्षों में उनमें आये बदलावों का अध्ययन करना।</p>	<ul style="list-style-type: none"> <li>● राज्य के विभिन्न 13 जनपदों में से कुल 72 जलागम क्षेत्र लिये गये हैं। प्रथम चरण में अल्मोड़ा जनपद के 2 जलागम क्षेत्रों के अध्ययन हेतु हाई रेज्योल्यूशन सैटेलाइट डेटा के उपयोग से लार्ज स्केल मैप्स तैयार किये गये हैं। इस सैटेलाइट डेटा के</li> </ul>	1 वर्ष

		<ul style="list-style-type: none"> <li>संवेदनशील जलागम क्षेत्रों का चिन्हीकरण तथा प्राकृतिक संसाधनों के वैज्ञानिक ढंग से उपयोग तथा प्रबंधन हेतु जियोस्पाशियल डेटाबेस तैयार करना।</li> </ul>				उपयोग से जलागम क्षेत्रों की विविध सूचनाएं 1:10000 स्केल पर तैयार की गई हैं।		
6	वानिकी-पारिस्थितिकीय एवं जलवायु परिवर्तन (अ)	<ul style="list-style-type: none"> <li>राज्य के विविध वन प्रकारों में कार्बन स्टॉक इवेंट्री कर 1:10000 स्केल पर जियोस्पाशियल डेटाबेस तैयार करना।</li> <li>राज्य में स्थित वन क्षेत्रों, वन प्रकारों एवं वन घनत्व का 1:10000 स्केल पर मानचित्रीकरण करना।</li> <li>उच्च हिमालयी क्षेत्रों में वनस्पति, मृदा, जल संसाधनों, बर्फ-हिमनद क्षेत्रों, कृषि, उद्यानिकी एवं पर्यटन पर पड़ रहे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का अध्ययन।</li> <li>ऐसेसमेंट ऑफ इकोसिस्टम सर्विसेज ऑफ फॉरेस्ट इन सेलेक्टेड रीजन।</li> <li>मेडिसिनल एण्ड एरोमैटिक प्लाण्ट्स इंफोर्मेशन सिस्टम</li> </ul>	7.00		9	<ul style="list-style-type: none"> <li>राज्य में स्थित वन क्षेत्रों, वन प्रकारों एवं वन घनत्व का 1:10000 स्केल पर मानचित्रीकरण करना।</li> <li>राज्य के कुछ चुने हुए जनपदों में औषधीय एवं संगंध पादपों का इंफोर्मेशन सिस्टम तैयार करना।</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>उत्तराखण्ड राज्य के विभिन्न स्थानों में जैवभार आंकलन हेतु एन.आर.एस. सी., हैदराबाद द्वारा विकसित कार्यविधि के उपयोग से राज्य के हिमालयी क्षेत्र के विभिन्न पारिस्थितिकीय तंत्रों में पादप जैवभार व कार्बन पूल का आंकलन कर जियोस्पेशियल डेटाबेस तैयार किया गया ठें</li> <li>उत्तराखण्ड राज्य के चयनित जनपदों में रिमोट सेंसिंग एवं जी.आई.एस. तकनीकी के उपयोग से बागवानी हेतु उपयुक्त प्रजातियों के चिन्हांकन एवं संरक्षण हेतु नैनीताल, देहरादून, उत्तरकाशी, पिथौरागढ़, अल्मोड़ा, एवं चमोली में फील्ड सर्वेक्षण कर विभिन्न फलों की प्रजातियों के बारे में सूचनाएं एकत्रित कर जियोस्पाशियल डेटाबेस तैयार किया गया है।</li> <li>एन.आर.एस.सी., हैदराबाद</li> </ul>	1 वर्ष

		फॉर सेलेक्टेड डिस्ट्रिक्ट्स।				के सहयोग से वनाग्नि सीजन के दौरान राज्य के संबंधित विभागों को वनाग्नि सूचना चेतावनी प्रतिदिन प्रेषित की गई है साथ ही वनाग्नि प्रभावित क्षेत्रों का मानचित्रीकरण भी किया गया है। ● वर्ष 2016-17 में पिथौरागढ़ जिले के लगभग 30 से अधिक बुग्यालों का सर्वेक्षण कर औषधीय, सगंध एवं संकटग्रस्त प्रजातियों का आंकलन किया गया है।		
7	(ब)	<ul style="list-style-type: none"> <li>उत्तराखण्ड में उपस्थित 240 से अधिक प्राकृतिक स्थलों के प्राकृतिक तंत्र सेवाओं का आंकलन।</li> <li>राज्य में कीड़ा-जड़ी के आवासों, एकत्रण, व दबाव की स्थिति का आंकलन।</li> </ul>	3.00		9	<ul style="list-style-type: none"> <li>उत्तराखण्ड में उपस्थित 240 से अधिक प्राकृतिक स्थलों के प्राकृतिक तंत्र सेवाओं का आंकलन। राज्य में कीड़ा-जड़ी के आवासों, एकत्रण, व दबाव की स्थिति का आंकलन।</li> </ul>		1 वर्ष
8	एग्रीकल्चर एण्ड हॉर्टीकल्चर	<ul style="list-style-type: none"> <li>विगत 15 वर्षों में गेहूं फसल की उत्पादकता पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का अध्ययन।</li> <li>अल्मोड़ा और देहरादून जनपदों में मल्टी-टेम्पोरल सैटेलाइट डेटा के उपयोग से विगत 27 वर्षों में कृषि भूमि में आए बदलावों का अध्ययन करना।</li> <li>उत्तराखण्ड राज्य के लिए कटाई से पूर्व गेहूं के</li> </ul>	3.00		9	<ul style="list-style-type: none"> <li>उत्तराखण्ड राज्य के लिए कटाई से पूर्व गेहूं के पैदावार तथा क्षेत्रफल का आंकलन।</li> <li>हाई रेजोल्यूशन सैटेलाइट डेटा के उपयोग से राज्य के 7 जनपदों में 'फ्रूट बेल्ट' का चिन्हांकन कर मानचित्रीकरण करना।</li> <li>राज्य के 2 जिलों देहरादून एवं ऊधम सिंह</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>सैटेलाइट डेटा के उपयोग से वर्ष 2016-17 के लिए गेहूं, गन्ना तथा चावल फसलों का कटाई से पूर्व कुल क्षेत्रफल तथा उत्पादन का आंकलन किया गया है।</li> </ul>	1 वर्ष

		<p>पैदावार तथा क्षेत्रफल का आंकलन।</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>• हाई रेजोल्यूशन सैटेलाइट डेटा के उपयोग से राज्य के 7 जनपदों में 'फूट बेल्ट' का चिन्हांकन कर मानचित्रीकरण करना।</li> <li>• राज्य के अल्मोडा व पौड़ी जनपदों में नगदी फसलों (मडुंवा) तथा टिहरी जनपद में झंगोरा फसल का मानचित्रीकरण करना।</li> <li>• राज्य के 2 जिलों देहरादून एवं ऊधम सिंह नगर में मृदा मानचित्रीकरण करना।</li> <li>• रिसेट डेटा द्वारा उत्तराखण्ड राज्य के 8 जिलों में खरीफ सीजन में चावल का कटाई से पूर्व क्षेत्रफल का आंकलन करना।</li> </ul>			नगर में मृदा मानचित्रीकरण करना।			
9	आपदा प्रबन्धन	<ul style="list-style-type: none"> <li>• राज्य में आपदा प्रबन्धन में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोगों पर आधारित अध्ययन करना।</li> <li>• साइंस ऑफ सर्वाइवल कार्यक्रम के तहत राज्य के समस्त जनपदों के स्कूलों में विद्यार्थियों को विभिन्न कार्यशालाओं के माध्यम से आपदा प्रबन्धन की विस्तृत जानकारी प्रदान की जाएगी।</li> </ul>	2.00		9	साइंस ऑफ सर्वाइवल कार्यक्रम के तहत राज्य के समस्त जनपदों के स्कूलों में विद्यार्थियों को विभिन्न कार्यशालाओं के माध्यम से आपदा प्रबन्धन की विस्तृत जानकारी प्रदान करना।	<ul style="list-style-type: none"> <li>• राज्य में आपदा प्रबन्धन में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोगों पर आधारित अध्ययन हेतु "आपदा प्रबंधन सैल" का गठन किया गया है जिसमें विषय-विशेषज्ञों एवं नवीनतम सैटेलाइट डेटा, सॉफ्टवेयर एवं तकनीकी का उपयोग किया जा रहा है। उत्तराखण्ड राज्य पारिस्थितिक दृष्टि से अति संवेदनशील हैं। केन्द्र में</li> </ul>	1 वर्ष

						<p>आपदा प्रबंधन कार्यों के अंतर्गत विविध स्केलों पर आपदा प्रभावित/संभावित क्षेत्रों की सूचनाएं तैयार की गई हैं, इनमें भूस्खलन, वनाग्नि, ड्रेनेज, जियोलॉजी व जियोमॉर्फोलॉजी एवं लीनियामेंट आदि प्रमुख हैं।</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>राज्य में प्राकृतिक आपदाओं एवं उनके प्रबन्धन हेतु यू-सैक द्वारा डी.एम.एम.सी. के सहयोग से साइंस ऑफ सर्वाइवल कार्यक्रम शुरू किया गया है, जिसके तहत राज्य के विभिन्न जनपदों के विभिन्न स्कूलों में छात्र-छात्राओं को प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से आपदाओं एवं आपदा से बचाव के बारे में जानकारी प्रदान की गई।</li> </ul>		
10	रिमोट सेंसिंग एवं जी.आई.एस. के उपयोग से रिस्पना राव वाटरशेड चैनल माइग्रेशन तथा भू-उपयोग/भू-आवरण पर इसके प्रभावों का आंकलन	<ul style="list-style-type: none"> <li>जियोस्पाशियल डेटाबेस तैयार करना</li> <li>रन ऑफ मॉडलिंग</li> <li>चैनल चेंज डिटेक्शन एनालिसिस</li> <li>भू-उपयोग/भू-आवरण चेंज डायनेमिक्स</li> </ul>	1.00		9	<ul style="list-style-type: none"> <li>जियोस्पाशियल डेटाबेस तैयार करना</li> <li>रन ऑफ मॉडलिंग</li> <li>चैनल चेंज डिटेक्शन एनालिसिस</li> <li>भू-उपयोग/भू-आवरण चेंज डायनेमिक्स</li> </ul>		1 वर्ष
11	जियोस्पेशियल डेटाबेस फॉर	<ul style="list-style-type: none"> <li>केदारनाथ यात्रा मार्ग पर अवस्थित समस्त आधारभूत</li> </ul>	2.00		9	<ul style="list-style-type: none"> <li>केदारनाथ यात्रा मार्ग पर अवस्थित समस्त</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>जियोस्पेशियल डेटाबेस फॉर कैपिसिटी ऐस्टिमेशन</li> </ul>	1 वर्ष

	कैपिसिटी ऐस्टिमेशन ऑफ चारधाम यात्रा रूट	सुविधाओं एवं इमेर्जेन्सी सर्विसेज का फील्ड सर्वेक्षण कर मानचित्रीकरण करना। ● वेब जी.आई.एस. विकसित करना।				आधारभूत सुविधाओं एवं इमेर्जेन्सी सर्विसेज का फील्ड सर्वेक्षण कर मानचित्रीकरण करना। वेब जी.आई.एस. विकसित करना।	ऑफ चारधाम यात्रा रूट के तहत ऋषिकेश से बद्रीनाथ यात्रा मार्ग में अवस्थित मौलिक सुविधाओं तथा इमरजेंसी सर्विसेज का मानचित्रीकरण किया गया है।	
12	जियोस्पाशियल डेटाबेस फॉर टूरिस्ट प्लेसेस इन उत्तराखण्ड	● राज्य में स्थित तीर्थ/पर्यटन स्थलों का मानचित्रीकरण करना। ● वेब जी.आई.एस. विकसित करना।	2.00		9	● राज्य में स्थित तीर्थ/पर्यटन स्थलों का मानचित्रीकरण करना। वेब जी.आई.एस. विकसित करना।	● राज्य में स्थित तीर्थ/पर्यटन स्थलों का मानचित्रीकरण करने हेतु फील्ड सर्वेक्षण किया गया है।	1 वर्ष
13	टेक्नोलॉजी इन्क्यूबेशन सेल	● केन्द्र में इन्क्यूबेशन सेल का गठन किया गया है, जिसमें थीम बेस्ड मोबाइल ऐप्स, टेक्नोलॉजी इनेबल एप्लीकेशंस डेवलपमेंट एवं डेटा मैनेजमेंट एण्ड डिलीवरी सिस्टम इत्यादि का सृजन किया जाएगा। ● डेवलपमेंट ऑफ वेब बेस्ड एण्ड स्टैण्ड एलोन सिस्टम्स।	5.00		9	विभिन्न विषयों पर मोबाइल ऐप्स बनाये जाएंगे।	● यूसैक द्वारा टेक्नोलॉजी इन्क्यूबेशन सेल का गठन किया गया है। इसका प्रमुख उद्देश्य थीम बेस्ड मोबाइल ऐप्स, टेक्नोलॉजी इनेबल एप्लीकेशन्स डेवलपमेंट एवं डेटा मैनेजमेंट एण्ड डिलीवरी सिस्टम इत्यादि का भी सृजन करना है।	1 वर्ष
14	स्पेस बेस्ड इन्फोर्मेशन सपोर्ट फॉर पावर प्रोजेक्ट्स	● राज्य के पावर स्टेशन/सब स्टेशन एवं उनके परिसम्पत्तियों व अधिग्रहित भूमि का मानचित्रण एवं भौगोलिक सूचना तंत्र का विकास करना।	3.00		9	राज्य के पावर स्टेशन/सब स्टेशन एवं उनके परिसम्पत्तियों व अधिग्रहित भूमि का मानचित्रीकरण करना।		1 वर्ष
15	हैल्दी माइण्ड एण्ड बॉडी विद स्पेस टेक्नोलॉजी	● सामान्य व गंभीर बीमारियों से बार-बार ग्रसित होने वाले क्षेत्रों का जियोस्पाशियल डेटाबेस	1.50		9	सामान्य व गंभीर बीमारियों से बार-बार ग्रसित होने वाले क्षेत्रों की पहचान कर उनका जी.आई.एस.		1 वर्ष



	एण्ड जियोग्रेफिकल इंफोर्मेशन सिस्टम	तैयार करना।				डेटाबेस तैयार करना।			
16	पुस्तकालय	<ul style="list-style-type: none"> <li>ऑनलाइन एण्ड ऑफलाइन वैज्ञानिक, शोध जर्नल्स हेतु सब्सक्रिप्शंस।</li> <li>विषय विशिष्ट पुस्तकों का क्रय।</li> </ul>	5.00		9	<ul style="list-style-type: none"> <li>ऑनलाइन एण्ड ऑफलाइन वैज्ञानिक, शोध जर्नल्स हेतु सब्सक्रिप्शंस।</li> <li>विषय विशिष्ट पुस्तकों का क्रय।</li> </ul>			1 वर्ष
17	ट्रेनिंग ऑन आर.एस./जी.आई.एस.	<ul style="list-style-type: none"> <li>रेखीय विभागों, विश्वविद्यालयों के विशेषज्ञों, शोधार्थियों, तथा तकनीकी संस्थाओं के प्रतिनिधियों के क्षमता संवर्धन हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन।</li> </ul>	1.00		9	रिमोट सेंसिंग एवं जी.आई.एस. तकनीकी के अनुप्रयोगों पर रेखीय विभागों, विश्वविद्यालयों के विशेषज्ञों, शोधार्थियों, तथा तकनीकी संस्थाओं के प्रतिनिधियों के क्षमता संवर्धन हेतु 4 प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन करना।	<ul style="list-style-type: none"> <li>विभिन्न संस्थानों के अधिकारियों/वैज्ञानिकों/अभियन्ताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं को अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की जानकारी प्रदान की गई। इनमें कृषि-बागवानी, वन विभाग, रेशम कीट पालन विभाग एवं विभिन्न विश्वविद्यालय तथा स्वैच्छिक संस्थान प्रमुख हैं।</li> </ul>		1 वर्ष
18	इन-हाउस-आर एण्ड डी, कैपिसिटी बिल्डिंग	<ul style="list-style-type: none"> <li>राज्य के विभिन्न इंजीनियरिंग कालेज, विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राओं को विभिन्न प्रकार के दीर्घकालीन एवं अल्पकालीन प्रशिक्षण प्रदान करना।</li> </ul>	1.00		9	राज्य के विभिन्न इंजीनियरिंग कालेज, विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राओं को विभिन्न प्रकार के दीर्घकालीन एवं अल्पकालीन प्रशिक्षण प्रदान करना।	<ul style="list-style-type: none"> <li>राज्य के विभिन्न इंजीनियरिंग कॉलेजों तथा विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं को विभिन्न प्रकार के दीर्घकालीन एवं अल्पकालीन प्रशिक्षण प्रदान किया गया।</li> </ul>		1 वर्ष

आवर्तक व्यय

क्र.सं.	योजना का नाम	योजना का उद्देश्य	आउट ले/बजट		एस0डी0 जी0 Goals/ Indicator	परिकल्पित (प्रोजेक्ट) आउटपुट वर्ष 2018-19	1-4-2017 की स्थिति (बेस लाइन)	परिकल्पित (प्रोजेक्ट) आउटकम	समय सीमा
			राजस्व	पूँजी गत					
01	प्रशासन एवं निर्देशन	समस्त आवर्तक व्यय यथा वेतन, भत्ते, भवन किराया, ट्रांसपोर्ट, यात्रा भत्ता, ऑफिस अपकीप एवं मेंटिनेंस आदि व्यय	130.00	—	—	समस्त आवर्तक व्यय यथा वेतन, भत्ते, भवन किराया, ट्रांसपोर्ट, यात्रा भत्ता, ऑफिस अपकीप एवं मेंटिनेंस आदि व्यय	—	—	1 वर्ष
02	साफ्टवेयर, हार्डवेयर आदि का क्रय एवं अपग्रेडेशन	केन्द्र की प्रयोगशालाओं एवं विभिन्न वैज्ञानिक परियोजनाओं के क्रियान्वयन हेतु आवश्यक सॉफ्टवेयर एवं हार्डवेयर का क्रय तथा अपग्रेडेशन	20.00	—	—	केन्द्र की प्रयोगशालाओं एवं विभिन्न वैज्ञानिक परियोजनाओं के क्रियान्वयन हेतु आवश्यक सॉफ्टवेयर एवं हार्डवेयर का क्रय तथा अपग्रेडेशन	—	—	1 वर्ष
03	अनुदान संख्या 23, योजनागत, अयोजनागत 4859 के अन्तर्गत उत्तराखण्ड अन्तरिक्ष उपयोग केन्द्र का भवन निर्माण	उत्तराखण्ड अन्तरिक्ष उपयोग केन्द्र को जिला प्रशासन द्वारा ग्राम डांडा लखौण्ड क्षेत्र में आवंटित 2 एकड़ भूमि पर भवन निर्माण प्रगति पर है। कार्यदायी संस्था द्वारा अनुबन्ध की शर्तानुसार कार्य करने हेतु शेष धनराशि का भुगतान किया जाना है।	—	200.00	—	उत्तराखण्ड अन्तरिक्ष उपयोग केन्द्र को जिला प्रशासन द्वारा ग्राम डांडा लखौण्ड क्षेत्र में आवंटित 2 एकड़ भूमि पर भवन निर्माण प्रगति पर है। कार्यदायी संस्था द्वारा अनुबन्ध की शर्तानुसार कार्य करने हेतु शेष धनराशि का भुगतान किया जाना है।	—	—	1 वर्ष